कामायनी: मानवतावादी दृष्टि का महाकाव्य

डॉ. भरतकुमार जे. ओड़ेदरा
हिंदी विभाग,
डॉ. वि. आर. जी. महिला महाविद्यालय, पोरबंदर

१. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य जगत में केवल प्रसाद नाम से प्रचलित जयशंकर प्रसाद युग के सर्वश्रेष्ठ कवि एवं नाटककार है। प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रसाद मूलतः कवि थे इसलिए इनके संपूर्ण साहित्य में कवि रूप अधिक उभर कर आया है । प्रसाद कृत कामायनी विश्व साहित्य के महत्वपूर्ण महाकाव्य में से हैं। कामायनी कार समस्त मानवीय आदर्शों को मनु, श्रद्धा एवं इडा के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। श्रद्धा कामायनी का सबसे उद्धात और मानवतावादी चरित्र है जिसके माध्यम से प्रसादजी मानवतावाद का दर्शन करवाते हैं।

२. कामायनी मानवतावादी दृष्टि

साहित्य में मानव के आदि पुरुष मनु का इतिहास वेदों से लेकर पूरा और इतिहास में बिखरा हुआ मिलता है। श्रद्धा और मनु के सहयोग से मानवता के विकास की गाथा को दढ़ता से मानी गई है। जल प्लावन भारतीय इतिहास में एक ऐसी प्राचीन घटना है, जिसने मनु को देवों से विलक्षण मानव की एक भिन्न संस्कृति प्रतिष्ठित करने का अवसर दिया। मनु भारतीय इतिहास के आदि पुरुष हैं।

समाज एवं संस्कृति का आधार सदाचार हैं। समाज में उद्धात मानवीय मूल्य यथा- करुणा, प्रेम, नैतिकता एवं नागरिकता को बल मिलेगा वह समाज ज्यादा सशक्त होगा। किंतु मानव समाज पूर्ण विकास के लिए प्रकृति के प्रति भी मानवता पूर्ण व्यवहार जरूरी हैं। मनुष्य, प्रकृति एवं उद्धात मानवीय मूल्य जब इन तीनों का संयोग होता है तो मानवतावाद की निर्मिति होती हैं।

मानवतावादी दर्शन के विकास में भारतीय एवं पाश्चात्य अनेक विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान हैं। महात्मा गांधी, मदर टेरेसा, सुकरात, फ्रांसीसी दार्शनिक ला- मात्री, कार्ल मार्क्स ,अल्बर्ट आइंस्टीन आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं। वसुदेव कुटुंबकम् कि भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा मानवतावाद का ही जयघोष है। इस दृष्टि से हिंदी साहित्य के लगभग सभी महत्वपूर्ण कालखंड में मानवतावाद के वाहक एवं पोषक रहे हैं । जयशंकर प्रसाद छायावाद के चार स्तंभ में से एक है उनकी रचनाओं में मनुष्य मात्र की चेतना का विस्तार लक्ष्य रहा है। प्रसाद जी का उद्देश्य भारतीय संस्कृति के मूल्यों की पुनर्स्थापना था, उसमें मानवता प्रथम स्थान पर रही। समता, प्रेम, विश्व बंधुत्व आदि भाव उनकी प्रायः सभी रचनाओं की आत्मा हैं उनके विषय में प्रो कल्याणमल लोढा लिखते हैं

"प्रसाद ने मानवतावादी (केवल मानववादी नहीं) विचारधारा को आधार बनाकर विश्व चेतना का निरूपण अपनी रचनाओं में किया है। व्यक्ति और समष्टि के समरसीभूत होने से उनके सभी उत्कृष्ट पात्र मानवतावादी आदर्शों के मूर्त रूप हैं।"[१]

स्वयं जयशंकर प्रसाद के शब्दों में- "यदि श्रद्धा और मनु अर्थात मनन के सहयोग से मानवता का विकास रूपक है, तो भी बड़ा ही भवभय और श्लाघ्य हैं। यह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है।"[२]

कामायनी की कथा मुख्यतः तीन चरित्रों श्रद्धा एवं इड़ा तथा १५ सर्गों, चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निवेद, दर्शन, रहस्य एवं आनंद पर आधारित हैं। "कामायनी के दर्शन का केंद्र बिंदु है आदर्शवादी मानवता, इसका आधार है श्रद्धा। वह मनुष्य को देव सभ्यता के दम से निकालकर कर्मशील और सर कर्मशील सर्जक व्यक्तित्व ही नहीं प्रदान करती अपितु उन्हें जीवन की पूर्णता और पारदर्शिता से भी परिचित कराना चाहती है।.....श्रद्धा आधुनिक मानव जीवन में प्रवृत्तिमूलकता, उदारता, समता, करुणा, लोकमंगल सौहार्द, सादगी और विश्वनीड़ का संदेश लेकर आती है जो समग्रता में आदर्शवादी मानवता का संदेश है। वह मनुष्य की उद्दात चेतना है, जिसका निर्माण वस्तुतः स्वाधीनता संग्राम काल के उच्चत्तर मानवीय तत्वों से हुआ है।"[३]

मनु और श्रद्धा दोनों भारतीय समाज के यथार्थ चरित्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्रद्धा में पूर्ण भारतीय मानवतावादी नारी का दर्शन होता है- सेवा, ममता, करुणा, त्याग एवं परोपकार आदि गुणों से युक्त समर्पित नारी। वह मनु की प्रेरणा शक्ति हैं। मनु द्वारा मेरी पशु बलि पर वह उन्हें धिक्कारते हुए उनसे प्रश्न करती है -

"और किसी की फिर बलि होगी, किसी देव के नाम।
कितना धोखा! उससे तो हम, अपना ही सुख पाते।।

ये प्राणी जो बचे हुए हैं, इस अचला जगती के।
उनके कुछ अधिकार नहीं, क्या वे सब ही हैं फींके।।
मनु! क्या यही तुम्हारी होगी उज्जवल नव-मानवता?
जिसमें सब कुछ ले लेना हो हंत, बची क्या शवता ।।"[४]

श्रद्धा के माध्यम से प्रसादजी बताते हैं कि मानवेतर प्राणियों को भी धरती पर जीने का, विचरण का उतना ही अधिकार है जितना मानवों को। मनुष्य भूल चुका है कि सृष्टि की शोभा समन्वय एवं संतुलन से ही है अपने व्यापक मानवीय मूल्यों के कारण कामायनी आज भी प्रासंगिक हैं। कामायनी में श्रद्धा के मानवतावाद में समानता का संदेश है-

"अपने में सबकुछ भर, कैसे व्यक्ति विकास करेगा।
यह एकांत स्वार्थ भीषण है, अपना नाश करेगा।।"
औरों को हंसते देख मनु, हंसो और सुख पाओं।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सब को सुखी बनाओं।।"[५]

संसार सुख का विस्तार ही वास्तव में व्यक्ति सुख की सार्थकता है और उसका दृष्टांत प्रसाद जी श्रद्धा के हृदय में सर्व सुखवाद का दर्शन कराया हैं। कामायनी 'जियो और जीने दो' का सिद्धांत दृष्टि है-

"पर जो निरीह जी कर भी कुछ उपकारी होने में समर्थ।
वे क्यों न जिये, उपयोगी बन इसका मै समझ सकी न अर्थ!
वे द्रोह न करने के स्थल है, जो पाले जा सकते स हेतु।
पशु से यदि हम कुछ बेहतर है, तो भव जलनिधि में बने सेतु।।"[६]

मानवता के पूर्णता की शर्त है स्त्री- पुरुष समानता। जब तक स्त्री पुरुष समानता का दृश्य नहीं है तो संसार में विषमता का विष व्यापत रहेगा। यथा-

"तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।"[७]

कामायनी में शैव दर्शन, प्रत्यभिश्रा दर्शन,आनंदवाद आदि दार्शनिक -आध्यात्मिक विचारधाराओं को दर्शाया गया है। इन सब का आशय मानवतावाद की स्थापना हैं। प्रसाद जी समरसतापूर्ण -समानतापूर्ण के लिए मनुष्य में करुणा एवं प्रेम का संचार हो, वह अपनी तमाम स्वभावगत बुराइयों पर विजय प्राप्त कर सके और मनुष्य होने की कसौटी पर खरा उतर सके। श्रद्धा का ह्रदय भाव का रत्न-निधि हैं-

"दया, माया, ममता लो आज, मधुरिमा लो अगाध विश्वास
हमारा ह्रदय रत्न-निधि स्वच्छ, तुम्हारे लिए खुला है पास।।"[८]

कामायनी में अध्यात्म एवं दर्शन पर डॉ. नगेंद्र की एक महत्वपूर्ण टिप्पणी है: "कामायनी की कथावस्तु एकांत विरल और आयाम अत्यंत विराट हैं, जिस का निर्वाह केवल दर्शन और रूपक अर्थात दार्शनिक रूपक के द्वारा ही संभव है। अतः एक देश और एक काल की परिधि में सीमित रचना विधान का आंकलन करने वाले प्रचलित प्रतिमान उनके साथ न्याय नहीं कर सकतें। कामायनी का मूल्यांकन करने के लिए उसकी अपनी समग्र संकल्पताओ मैं से ही ऐसे व्यापक प्रतिमानों का संधान करना होगा, जो परंपरा से अबद्ध न होकर उसे एक नवीन दिशा प्रदान करते हो ।"

आनंद सर्ग किस महाकाव्य का उपसंहार हैं।मानसरोवर की यात्री दल को संबोधित करते हुए मनु कहते हैं- "देखो यहां कोई पराया नहीं है दूसरों की सेवा ही सुख संसृति हैं। दैत भाव ही विस्मृति हैं।" कामायनी के इस दृश्य में जगत की मंगल कामना, पूर्ण काम की प्रतिभा और पुलकित विश्व चेतना के रूप में उभरी है। हिमालय प्रकृति की इस पृष्ठभूमि में कविता एक और शिखर छू लेती है।

"प्रति फलित हुई सब आंखें, उस प्रेम ज्योति विमला से।
सब पहचाने से लगते, अपनी ही एक कला से।।
समरस थे जड़ या चेतन, सुंदर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती, आनंद अखंड धना था ।।"[९]

कामायनी की कथा सुत्र में देखा की कथा का प्रारंभ हुआ देव सभ्यता के विनाश से, मध्य में कथा मानव सभ्यता के विकास से जुड़ जाती है किंतु अंत में पुनः कामायनी (मनु, श्रद्धा, इडा) से आनंदवाद की स्थापना की गई हैं। कुछ भी हो कामायनी मानवतावाद का महाकाव्य है, यह दढ़ता से स्वीकार किया जा सकता हैं।

संदर्भ सूची

१. प्रसाद चिंतन, सं. विमला गुप्ता, पृष्ठ ३, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
२. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ ६, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
३. साहित्य परंपरा का पुनः मूल्यांकन शंभुनाथ, पृष्ठ ९, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
४. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ ६७ राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली।
५. वही, पृष्ठ ६८।
६. वही, पृष्ठ ७४।
७. वही, पृष्ठ ८२।
८. छायावादी काव्य वैभव, सं. बी के कलासवा, पृष्ठ ५४ शांति प्रकाशन, अहमदाबाद।
९. प्रसाद रचना संचयन, सं. विष्णु प्रभाकर /रमेशचंद्र शाह, पृष्ठ ३३, साहित्य अकादमी नई दिल्ली।